गीता जयन्ती (मोक्षदा एकादशी) पर विशेष ...

युद्ध कर और विजयी बन,

यही गीता का सार ...

➡ ब्रह्माकुमार दिनेश, हाथरस

दो भाइयों का एक संयुक्त परिवार था। भाइयों का आपस में बहुत स्नेह लेकिन दोनों की पत्नियों में आपस में तकरार होती रहती थी जिससे घर का वातावरण कभी-कभी कलह का बन जाया करता था। दोनों दु:खी थे। पत्नियों को समझाने का प्रयास किया गया। वे पढ़ी-लिखी थीं, आपस में विवाद नहीं चाहती थीं लेकिन कभी-कभी न चाहते हुए भी हो जाता था। दोनों भाई एक सन्त के पास पहुँचे और अपनी समस्या बताई। सन्त ने दोनों पत्नियों को बुलाया, प्यार से समझाया और कहा कि न चाहते हुए भी कभी लड़ाई हो जाती है तो खूब लड़ो लेकिन लड़ने की तीन शर्तें हैं उन्हें स्वीकार करना पड़ेगा। दोनों पत्नियाँ इसके लिए तैयार हो गईं। सन्त ने पहली शर्त बताई कि कभी भी घर के बीच दीवार लगानी भी पड़े तो भी एक रास्ता अवश्य छोड़ देना। ऐसा इसलिए कि कठिनाई के समय, परिवार से बेहतर कोई साथी बन नहीं सकता। यदि परिवार का साथ है तो दुनिया की कोई भी ताकत कमज़ोर पड़ जायेगी। दूसरी शर्त, लड़ते समय केवल कहने योग्य बातें ही कही जायें। घर-परिवार की गुप्त बातें सार्वजनिक न की जायें। तीसरी शर्त, लड़ना पड़े तो भी क्रोध किये बिना, आँख दिखाये बिना लड़ना है। अब इसके लिए दोनों तैयार हो गईं। यही तो गीता का सार है।

काम, क्रोध, लोभ नरक के द्वार

श्रीमद्भगवद्गीता पर एक नज़र डालने से ही मालूम पड़ जाता है कि यह ज्ञान किसी शस्त्रयुद्ध के लिए नहीं लेकिन मनुष्यों की विकारी मनोवृत्ति को निर्विकारी बनाने अर्थ धर्मयुद्ध के लिए दिया गया है। अध्याय 16 का 21वाँ श्लोक कहता है, काम, क्रोध, लोभ ये तीन प्रकार के नरक के द्वार आत्मा का नाश करने वाले अर्थात् उसको अधोगति में ले जाने वाले हैं। गीता के तीसरे अध्याय के 37 से 43 तक के श्लोक बताते हैं कि मनुष्य का दुर्जेय अर्थात् मुश्किल से जीता जाने योग्य शत्रु यह काम विकार है। इस शत्रु को वश में करके उसे मारने की प्रेरणा दी गयी है। गीताकार का भावार्थ है – रजोगुण से उत्पन्न यह काम ही क्रोध है। जैसे धुएँ से अग्नि, मैल से दर्पण ढका रहता है उसी प्रकार काम से ज्ञान ढका रहता है। इन्द्रियों को वश में करके ज्ञान और विज्ञान (ज्ञान, योग) का नाश करने वाले काम को बलपूर्वक मार डाल। बुद्धि के द्वारा मन को वश में करके हे महाबाहो, तू इस काम रूपी दुर्जेय शत्रु को मार डाल। सचमुच आज इस काम विकार से ही सारी दुनिया जल रही है। आज समाज में इसका ही आतंक फैला हुआ है।

जिन्होंने भी गीता का सांगोपांग अध्ययन किया होगा वे ज़रूर महसूस करते होंगे कि श्रीमद्भगवद्गीता में मानव के महान शत्रु काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार आदि महाविकारों को मार डालने की बात बार-बार कही गई है तथा सद्गुणों, दैवीय सम्पदा को धारण करने की प्रेरणा प्रदान की गई है।

मोक्षदा एकादशी

गीता जयन्ती को मोक्षदा एकादशी यानी मुक्तिदायिनी एकादशी के रूप में भी मनाया जाता है। अब इस गहन राज़ को समझ लें कि दस इन्द्रियाँ और एक मन को मिलाकर एकादश हैं, इन सबके ऊपर नियंत्रण अर्थात् विजय प्राप्त करना ही सच्ची एकादशी है। इससे ही जीते जी मोक्ष यानि जीवनमुक्ति मिलती है। यही तो मोक्षदा एकादशी है। एकादशी का व्रत भी धर्मप्रेमी करते हैं। व्रत अर्थात् स्वयं की आसुरी वृत्तियों और इन्द्रियों को नियंत्रण में करना।

कल्याणकारी है भगवान की वाणी

महाभारत में वर्णित हर यौद्धे को आज प्रैक्टिकल में देखा जा सकता है। अर्जुन उस व्यक्ति विशेष का पर्याय है जो ज्ञान को अर्जित करने वाला है। युधिष्ठिर उस वीर का पर्याय है जो विकारों के साथ धर्मयुद्ध में धर्म और श्रेष्ठ कर्म पर स्थिर रहता है। भले ही भीष्म जैसे धर्मज्ञ, द्रोणाचार्य जैसे शास्त्र और शस्त्र विद्या के ज्ञाता, भीम जैसे बलवान, नकुल और सहदेव जैसे सुन्दर और आज्ञाकारी, दुशासन जैसे दुष्ट और दुर्योधन जैसे अभिमानी लोग संसार में हों, लेकिन यह परम सत्य ज्ञान सिर्फ उनके नसीब में होता है जो परमात्मा को अपना सब कुछ मानते हैं, जिनकी प्रीत बुद्धि है, जिन्होंने अपना सर्वस्व ईश्वर को समर्पण किया है। कल्पान्त में प्रजापिता ब्रह्मा बाबा के अन्दर प्रीत बुद्धि के ये सारे लक्षण विद्यमान पाये गये। अजानबाहु, धर्मप्रेमी, सभी प्रकार से सम्पन्न होने के बाद भी केवल परमात्मा शिव की एक प्रेरणा मात्र से उन्होंने अपना सर्वस्व लोक कल्याणार्थ, अहिंसक युद्ध लड़ने वाला अर्जुन बनकर लगा दिया। लोगों के भयंकर विरोध के बाद भी एक बल एक भरोसे से वे इस धर्मयुद्ध में स्थिर यानि 'युधिष्ठिर' रहकर संसार के लिए दृष्टान्त और शास्त्रों में गायनयोग्य ब्रह्मा की उपाधि से पुकारे गये। यह तो प्राय: सभी मानते हैं कि भगवान कल्याणकारी हैं इसलिए वे शिव कहलाते हैं। वे शान्ति और प्रेम के सागर हैं जिनकी एक बूंद के लिए भी दुनिया तरसती है। अत: उनकी वाणी ही कल्याणकारी है। कल्पान्त के समय (सुधीजन जानते हैं कि कल्पान्त यानि कल्प का अन्त सतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग और कलियुग इन चारों युगों के बाद ही होता है न कि द्वापरयुग में कल्पान्त होता है) परमात्मा फिर से आकर नये कल्प की स्थापना कराते हैं। इसकी पुष्टि गीता के ही 9वें अध्याय के सातवें श्लोक ''सर्वभूतानि कौन्तेय प्रकृतिं यान्ति मामिकाम्। कल्पक्षये पुनस्तानि कल्पादौ विसृजाम्यहम्।।'' से होती है।

लोकल्याणार्थ मिलिए और आगे बढ़िए

कुल मिलाकर यही तो दो भाइयों के बीच कुरूक्षेत्र है जिसमें लड़ना ज़रूर है लेकिन बिना किसी की हत्या किये, बिना किसी पर क्रोध किये, बिना लोभ और मोह के वशीभूत हुए। इसमें जो विजयी बनता है वह यहाँ यानि इस जन्म में भी सुखी (संतुष्ट) रहता है और अगले जन्मों में भी श्रेष्ठ प्रारब्ध को पाता है। यही सच्चा गीता सार है। इलाहाबाद में और कोलकाता में दो विपरीत धाराओं का मिलन होता है और उनका मिलना संगम बन जाता है और लोगों के लिए आदरणीय हो जाता है। एक मिलन आगे बढ़कर मानवमात्र के कल्याण के लिए प्रस्थान कर जाता है, दूसरा मिलन एक दो में समाहित होकर एक समान बन जाता है। इसलिए इस कर्मक्षेत्र पर दो विपरीत धाराओं की तरह लोक कल्याण अर्थ मिलिए और आगे बढ़िए। यही धर्म क्षेत्र है, यही कुरूक्षेत्र है। ☺